Subject - Maithili (IInd semester)
Paper code CC-6, MTL-522
Topic - Belak Maral
Format - PDF

Name/contact - Dr. Sudhir Kumar Jha
Department of Maithili
Patna University
Mobile - 9661819662
Email - drsudhirkrsha1170@gmail.com

Scanned with CamScanner

बेलक मारल

'बेलक मारल' एकांकी एक यथार्थवादी सामाजिक रचना अछि। एहि मे एकांकीकार वर्त्तमान समाजक असन्तुलनक विवेचन कए ओहि मे अपेक्षित सुधार अनबाक लेल पाठक लोकनि कें प्रेरित कएलनि अछि। लक्ष्मी, नारायन आ कमल एहि एकांकीक मुख्य पात्र छथि। लक्ष्मी आ नारायन निम्नवर्गक लोक छथि। अर्थाभाव मे हुनक जीवन अत्यधिक कष्टमय भए गेल छनि। ओ दुनू प्राणी कुकुरक जीवन जीबि रहल छथि। समाज मे जे स्थान कुकुरक छैक, सएह स्थान हुनको अछि। कुकुरहि जकाँ समाज मे ओहो दुनू गोटा कें तिरस्कार, दुत्कार भेटैत छनि। कुकुरे सदृश ओहो सभ जूठ भोजन पर जीवन-निर्वाह करैत छथि। पइंच किछु एहनो कुकुर अछि जकर जीवन हुनका लोकनिक जीवन सँ नीक, बेसी सुखमय अछि।

ओ दुनू प्राणी एक सड़कक कात मे फुटपाथक पाटाँ ताड़क दज्जाक एक खोपड़ी बनाए कए शीत आ ताप सँ अपन जीवनक रक्षा करैत छथि। धनिक लोक सभ कें ओहो खोपड़ी दुखे दैत छनि। ओनो-कनि ओहि खोपड़ी कें नष्ट कराए ओहि दुनू प्राणीक प्राण रक्षाक आधार कें समाप्त कए दैत छथि। प्रशासन सेहो धनिके लोकनि कें प्रोत्साहन दैत अछि। सिपाही द्वारा लक्ष्मी-नारायणक पिटाइयो होइत छैक। दुनूक कपार फाटि जाइत छैक। सोनितक कोनो आर-पार नहि। सोनित सँ हुनक वस्त्र भीजि जाइत अछि। ओ सभ तँ ककरो खास जमीन मे नहि रहैत छलथि। तैयो हुनक ई गति भेल। सिपाही द्वारा हुनक दुर्दशा कराओल गेल। आजुक निम्नवर्गीय लोकक एहने सन दशा अछि। दिन-राति हुनका सभ पर अत्याचार होइत रहैत छनि। हुनका लोकनिक अपराध मात्र इएह थिक जे ओ सभ गरीब छथि। आजुक सभ्य समाज मे गरीबे अपराधी मानल जाइत अछि। जे गरीब इमानदार छथि तनिका ई समाज बैमान बुझैत अछि। कोनो ई गप्प नहि जे ई समाज सहानुभूति प्रदर्शित करएनिहार लोक सँ रिक्त होअए मुदा सहानुभूति प्रदर्शित करएनिहार लोक मे प्रयत्नक काज अछि। गरीबक हितचिन्तक 'माया' सेहो एहि प्रसंग चेतनाशून्य छथि। यद्यपि हुनक वाणी सँ निर्धनक प्रति जे हुनक हृदय मे स्वाभाविक स्नेह अछि से प्रगट होइत अछि तथापि ओ ओकरा क्रियाक रूप नहि दए पबैत छथि, कारण ओ किछु अनर्गल एवं अत्याचारी व्यक्तिक संसर्ग मे विकृत भए गेल छथि। हुनका सभ लेल स्नेह रखनिहार 'कमल' छथि। कमलक हृदय सदिखन कोमले रहैत अछि। ओहि सँ सदिखन कोमले भावनाक उत्पत्ति होइत रहैत छैक।

Scanned with CamScanner

आजुक सामाजिक व्यवस्था मे निर्धन लोकनिक लेल कोनो स्थान नहि। हुनक अनुरोध कैं के सुनैत अछि। रोगाक्रिक उपचारोक सुविधा हुनका लोकनि कैं प्राप्त नहि होइत छनि। हुनका सबहिक जिनगी चिन्ते मे डूबल रहैत अछि। महल मे बैसल लोक सभ हुनका सबहिक दुखमय जीवन पर हँसी उड़बैत अछि। ओकरा सबहिक शोनित धनिकक दृष्टि मे फगुआक रंग छैक।

आइ धनिके कैं सब प्रकारक सुविधा प्राप्त छनि। हुनके सभ लेल अस्पताल, पैघ-पैघ डॉक्टर आ कीमती औषधि सब छनि। वर्त्तमान युग मे सभक आधार छैक टाका। जकरा लग टाका नहि छैक से समाज मे नीच मानल जाइत अछि। कतबो क्यो पढ़ल-लिखल विद्वान होअए मुदा टाका नहि रहला पर समाज मे ओकर कोनो मोजर नहि। टाकाक प्रभाव सभक जीवन पर छै। टाका बिनु क्यो किछु नहि प्राप्त कए सकैत अछि। टाका पर जीवनक संपूर्ण अर्थव्यवस्था आधारित होइत छैक। वस्तुक संबंध टाका सँ बान्हल छैक। जनिका संग टाका छनि, सएह रोग सँ मुक्त भए सकैत छथि, मृत्यु सँ बाँचि सकैत छथि। टाकाहीन व्यक्ति कैं भिन्न-भिन्न प्रकारक कष्ट सहए पड़ैत छैक। अस्पताल मे ओकरा लेल कोनो औषधि नहि, मृत्यु सँ क्यो बचौनिहार नहि। अर्थहीन लोक लेल अस्पताल मे दवाइक स्थान पर हरियर-पिअर पानि रहैत छैक, पानिएहि सँ ओकरा सभक व्याधिक उपचार होइत छैक। दवाइक अभाव मे ओकर मृत्यु भए जाइत छैक। टाकाहीन लोकक लेल अस्पताल वा कोनहुँ कल्याण संस्थान नाटकघर बनल रहि जाइत छै।

Scanned with CamScanner